"नानक दुखिआ सभ संसार"

- सहंसर दान दे इंद्र रोआइआ । परस राम रोवै घरि आइआ । अजै सु रोवै भीखिआ खाई । ऐसी दरगह मिलै सजाई ।

अर्थः- गौतम ऋषि ने हजार भगों का दण्ड दे के इन्द्र को रुला दिया, श्री रामचंद्र से अपना बल छिनवा के परस राम घर आ के रोया । राजा अजै रोया जब उसको लिद की दी हुई भिक्षा खानी पड़ी, प्रभु की हजूरी से ऐसी ही सजा मिलती है ।

रोवै राम निकाला भइआ । सीता लखमण विछुड़ि गइआ । रोवै दहसिर लंक गवाई । जिनि सीता आदी डउर वाई ।

अर्थः- जब राम जी को देश निकाला मिला सीता लक्ष्मण विछुड़े तब राम जी भी रोए । रावण, जिसने साधु बन के सीता का हरण करके ले आया, लंका गवा के रोया ।

रोवहि पांडव भए मजूर । जिन के सुआमी रहत हदूरि । रोवै जनमेजा खुइ गइआ । एकी कारण पापी भइआ ।

अर्थः- पाँचों पाण्डव जिनके पास श्री कृष्ण जी रहते थे भाव, जिनका पक्ष करते थे, जब राजा वैराट के मजदूर बने तब रोए । राजा जनमेजा चूक गया 18 ब्राहमणों को जान से मार बैठा, प्रायश्चित के लिए 'महाभारत' सुना, पर शंका की, इस एक गलती के कारण पापी ही बना रहा भाव, कोढ़ ना हटा और रोया ।

रोवहि सेख मसाइक पीर । अंति कालि मत लागै भीड़ । रोवहि राजे कनं पड़ाइ । घरि घरि मागहि भीखिआ जाई ।

अर्थः- शेख पीर आदि भी रोते हैं कि कहीं ऐसा ना हो कि अंत के समय कोई बिपता आ पड़े । भरथरी गोपीचंद आदिक राजा, जोगी बन के दुखी होते हैं जब घर - घर जा के भिक्षा माँगते हैं ।

रोवहि किरपन संचहि धन जाई । पडित रोवहि गिआन गवाई । बाली रोवै नाहि भतार । नानक दुखीआ सभ संसार ।

अर्थः- कँजूस धन इकट्ठा करते हैं पर रोते हैं जब वह धन उनके पास से चला जाता है, ज्ञान की कमी के कारण पण्डित भी ख्वार होते हैं । स्त्री रोती है जब सिर पर पति ना रहे । हे नानक ! सारा जगत ही दुखी है ।

मने नाउ सोई जिण जाई । अउरी करम न लेखै लाई ।1।

अर्थः- जो मनुष्य प्रभु के नाम को मानता है भाव, जिसका मन प्रभु के नाम में पतीजता है वह जिंदगी की बाजी जीत के जाता है, 'नाम' के बिना कोई और काम जिंदगी की बाजी जीतने के लिए सफल नहीं होता ।

जप तप सभ किछ मनिऐ अवरि कारा सभि बादि । नानक मनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर प्रसादि ।2। पउड़ी ।

अर्थः- यदि मन प्रभु के नाम में पतीज जाए जो जप - तप आदि हरेक उद्यम उसी में आ जाता है, नाम के बिना और सारे कर्म व्यर्थ हैं । हे नानक ! 'नाम' को मानने वाला आदर पाता है, ये बात गुरु की कृपा से समझी जा सकती है ।

काइआ हंस धुरि मेल करते लिखि पाइआ । सभ महि गुपत वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ।

अर्थः- शरीर और जीवात्मा का संजोग धुर से कर्तार ने अपने हुक्म के अनुसार बना दिया है । प्रभु सब जीवों में छुपा हुआ मौजूद है, गुरु के द्वारा प्रकट होता है

गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ । सची वाणी सच है सच मेलि मिलाइआ । सभ किछ आपे आपि है आपे देइ वडिआई ।10। (1-953-954)

अर्थः- जो मनुष्य गुरु की शरण आ के प्रभु के गुण गाता है गुण उचारता है वह गुणों में लीन हो जाता है । सतिगुरु की सच्ची वाणी के द्वारा वह मनुष्य सच्चे प्रभु का रूप हो जाता है, गुरु ने सच्चा प्रभु उसको संगति में रख के मिला दिया । हरेक हस्ती में अस्तित्व में प्रभु स्वयं ही मौजूद है और स्वयं ही बड़ाई महानता, महिमा बख्शता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"